किशोरावस्था में मानसिक विकास
(MENTAL DEVELOPMENT DURING ADOLESCENCE)

किशोरावस्था के दौरान किशोर एवं किशोरियों का मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँचने लगता है। इस अवस्था में होने वाले मानसिक विकास से सम्बन्धित प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित ढंग से प्रस्तुत की जा सकती हैं—

1. बुद्धि का अधिकतम विकास (Maximum Development of Intelligence)—किशोरावस्था में बुद्धि का विकास उच्चतम सीमा तक हो जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक बुद्धि के पूर्ण विकास के लिए अलग-अलग आयु सीमा मानते हैं। कुछ मानते हैं कि 16 वर्ष तक, कुछ का मानना है 18 वर्ष तक बुद्धि का पूर्णरूपेण विकास हो जाता है। मनोवैज्ञानिक वुडवर्थ 20 वर्ष की सीमा मानते हैं।

2. उच्चतर मानसिक शक्तियों का विकास (Development of Higher Mental Abilities)—इस अवस्था में उच्च मानसिक शक्तियों का पर्याप्त विकास हो जाता है। किशोरावस्था में मानसिक विकास बहुत से बौद्धिक क्षेत्रों को गतिशील और उन्नत बना देता है, जैसे—

(I) तथ्यों को सामान्यीकृत करने की योग्यता का विकास,

(II) सोचने-समझने की क्षमता का विकास,

(III) परोक्ष चिन्तन की योग्यता का विकास,

(IV) दीर्घकालीन स्मृति का विकास,

(V) भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने की क्षमता का विकास,

(VI) समय के संप्रत्यय का स्पष्ट हो जाना,

(VII) समस्या समाधान की योग्यता का विकास,

(VIII) राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को समझने की योग्यता,

(IX) किसी भी स्थान पर, किसी भी विषय पर लम्बी बहस करने की क्षमता का विकास,

(X) अपने क्षेत्र से बाहर के व्यक्तियों से सम्प्रेषण की क्षमता का विकास,

(XI) निर्णय लेने की शक्ति का विकास।

3. रुचियों में विविधता (Various Interest)—किशोरावस्था में रुचियों का विकास बहुत तीव्र गति से होता है। बालक और बालिकाओं में कुछ रुचियाँ समान होती हैं तथा कुछ भिन्न होती हैं। जिन रुचियों में समानता होती है, वे हैं भावी जीवन एवं व्यवसाय में रुचि, फिल्मी, गीत सुनना, फिल्म

देखना आदि। इसके अतिरिक्त बालकों में खेल, व्यायाम में अधिक रुचि दिखाई पड़ती है जबकि किशोरियों में संगीत, नृत्य व साहित्य आदि में अधिक रुचि होती है। शारीरिक स्वास्थ्य तथा आकर्षण, पौष्टिक भोजन, वेशभूषा तथा पढ़ाई-लिखाई में भी किशोर-किशोरियों की विशेष रुचि होती है।

4. भाषा (Language)—किशोरावस्था में भाषा ज्ञान तीव्रता से बढ़ता है। उसके पास शब्दों का विशाल भण्डार हो जाता है, जिसके माध्यम से वह किसी से भी, किसी भी विषय पर या कहीं पर भी तर्क, विचार, बहस करता है। किशोर यह भी समझने लगता है किससे, किस तरह की भाषा में बातचीत करना चाहिए। औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थितियों में भी वह भाषा के प्रयोग में सतर्कता बरतने लगता है।